ये है हमारी संस्कृति

यह दीक्षांत समारोह इसलिए भी यादगार बन गया क्योंकि छत्तीसगढ़ी कल्चर को दिखाया गया। चीफ गेस्ट को खुमरी पहनाकर स्वागत किया गया। राउत नाचा की प्रस्तुति भी दी गई।

#ConvocationTime डिग्री और मेडल से दमके स्टूडेंट्स के चेहरे, सवा तीन घंटे चला दीक्षांत समारोह

IIM के कॉन्वोकेशन में राउत नाचा, चीफ गेस्ट का खुमरी से सम्मान, ऐसा पहली बार

पत्रिका ZOOM रिपोर्टर
patrika.com

रायपुर. आईआईएम का 13वां दीक्षांत समारोह बुधवार दोपहर 3.30 बजे सब्बी मैदान में शुरू हुआ। समापन शाम 6.15 बजे नेशनल एंथम के साथ हुआ। चीफ गेस्ट डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज के को-चेयरमैन और एमडी जीवी प्रसाद रहे।

इसमें 22 आउटस्टैंडिंग ग्रेजुएट, 296 पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम ग्रेजुएट, 184 ई-पीजीपी ग्रेजुएट और 11 फैलो व एग्जीक्यूटिव फैलो प्रोग्राम इन मैनेजमेंट ग्रेजुएट्स ने डिग्री प्राप्त की। साथ ही 2018-20 और 2019-21 के 124 एलुमनाई ने भी डिग्री हासिल की। बीओजी चेयरपर्सन पुनीत डालमिया ने छात्रों से कहा कि जीवन के उतार-चढ़ावों और चुनौतियों का सामना करते समय इंडियन वैल्यूज को अपनी मार्गदर्शिका बनाए रखें। डायरेक्टर रिपोर्ट के जरिए प्रोफेसर रामकुमार काकानी ने संस्थान की उपलब्धियों को साझा किया।

तन्वी बजोरा को डिग्री देते हुए से प्रो. काकानी, जीवी प्रसाद और पुनीत डालमिया।

खुद पर भरोसा रखो, खूब मेहनत करो और अपने काम पर फोकस्ड रहो

पीजीपी में सेकंड हाईएस्ट सीजीपीए हासिल करने वाली तन्वी बजोरा को डायरेक्टर गोल्ड मेडल मिला। इंदौर की तन्वी ने बताया, मेरा प्लेसमेंट हो गया है। मैं जल्द ही जॉब ज्वाइन करूंगी। लोग कहते थे कि मैं आगे नहीं बढ़ सकती। लेकिन मुझे खुद पर भरोसा था। यही वजह है कि मैं अपनी मंजिल तक पहुंची। मुझे पढ़ने का बहुत शौक था। मैंने मैग्जीमम टाइम पढ़ाई में ही दिए। यही वजह है कि मुझे डायरेक्टर गोल्ड मिला। बड़े-बड़े ऑर्गेनाइजेशन में मैं लीडरशिप की पोजिशन में जाना चाहती हूं। खुद पर भरोसा रखो, खूब मेहनत करो और जिस चीज के लिए आप आए हो उस पर पूरी तरह फोकस्ड रहो।

भावुक पल

दीक्षांत में डिग्री लेने के बाद एक विद्यार्थी भावुक हो गई।

संकट में घबराए नहीं, इसी से निकलेगा रास्ता

मुख्य अतिथि जीवी प्रसाद ने छात्रों को सलाह दी कि वे चुनौतियों का सामना करें और समाज में बेहतर योगदान दें। बोले- मैनेजमेंट की पढ़ाई आपको तीन बातें सिखाती है। पहला, बड़ा विजन देती है। दूसरा, एनालिटिकल और क्रिटिकल सोचने की स्किल को डेवलप करती है और तीसरा, आपको जीवन का सामना करने के लिए तैयार करती है। उन्होंने डिग्री होल्डर्स से कहा कि जब संकट के पल उनके रास्ते में आते हैं, तो वे घबराएं नहीं, हो सकता है संकट के पल ही आपके लक्ष्य को आकार दे दें। प्रसाद ने छात्रों को पांच बातें बताईं जिसे वे अपनी जिंदगी में अपनाकर सफल हो सकते हैं। इसमें उद्देश्य की खोज, सीखने की ललक, बेहतर ऑर्गेनाइजेशन, अच्छी सोच और बी मोर देन योर वर्क शामिल है।

डिग्री ऊपर, मोमेंटो नीचे

छात्रों को अतिथियों की ओर से मंच पर डिग्री दी जा रही थी। विद्यार्थी डिग्री लेने दो-दो की संख्या में मंच पर आ रहे थे। उनमें से एक को डायरेक्टर और दूसरे को बोर्ड ऑफ गवर्नर चेयरपर्सन डिग्री दे रहे थे। जबकि मंच से नीचे उतरते ही इंस्टीट्यूट की अन्य फैकल्टी उन्हें मोमेंटो दे रहे थे।

जब दीक्षांत छोड़ बाहर निकल गए

दीक्षांत के दौरान कई डिग्रीधारी और उनके पैरेंट्स डिग्री लेकर बाहर निकल गए जबकि कार्यक्रम जारी था। आईआईएम के एक प्रोफेसर ने बाहर निकलकर उन्हें डांटा। इसके बाद वे भीतर जाकर बैठे।

ई-मेल देखकर झूम उठी थी

2020 की एलुमिनाई करिश्मा ने कहा कोविड के कारण मुझे ऑनलाइन डिग्री मिली थी। उसके दो साल बाद हमें उम्मीद थी कि कॉन्वोकेशन होगा लेकिन जब नहीं हुआ तो होप छोड़ दिए थे, लेकिन इस साल जब मेल आया तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। यहां अपने बैचमेट से चार साल बाद मिले, यह समय बहुत ही रोमांचक रहा।

आज लगा कि मेहनत सफल हुई

पीजीपी चेयरपर्सन मेडल हासिल करने वाले मुंबई के रित्विक मधुर अग्रवाल ने कहा कि मैंने अच्छे से पढ़ाई की थी और जब मेरा नाम मेडल के लिए पुकारा गया तो लगा कि मेहनत सफल हुई। मेरा एटीट्यूड हमेशा से कंसिस्टेंट और गोल्स पर फोकस्ड रहा है।

जो भी करें, उसमें अपना बेस्ट दें

ओवरऑल परफॉर्मेंस में मेडल हासिल करने वाले लखनऊ के अर्जुन वासिल ने बताया कि ये मेडल उन्हें मिलता है जो एकेडमिक के साथ ही एक्स्ट्रा करिकुलर में भी बेहतर परफॉर्म करते हैं। मेडल मिलेगा यह सोचकर पढ़ाई न करें बल्कि जो भी करें उसमें अपना बेस्ट दें।

क्योंकि मेहनत का कोई तोड़ नहीं

ईपीजीपी में बीओजी चेयरमैन गोल्ड हासिल करने वाली मुंबई की प्राची दीक्षित ने कहा, गृहस्थी, कामकाज और पढ़ाई के बीच तालमेल बिठाने के लिए टाइम मैनेजमेंट बहुत मायने रखता है। मैंने भी यही किया। मैंने बेहतर परफॉर्मेंस के लिए पूरी कोशिश की थी। जूनियर को फिर मैसेज में कहा कि कॉन्सेप्ट क्लियर रखें। मेहनत का कोई तोड़ नहीं होता। अगर आप डिसिप्लिन रखते हैं तो चीजें आसान होने लगती हैं।

टाइम मैनेजमेंट बड़ा चैलेंज

ईपीजीपी डायरेक्टर गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाली नोएडा की रहने वाली हीना भाटिया ने बताया, मैंने जिस डिटर्मिनेशन के साथ काम किया है था मुझे उम्मीद थी कि ऐसा अचीवमेंट मिलेगा। प्रोफेशनल होने के नाते टाइम मैनेजमेंट बहुत मुश्किल होता है। हमने वीकेंड में पढ़ाई की है, कामकाजी होने के नाते हमें वीकेंड फैमिली में बिताना होता है। ऐसे में टाइम को मैनेज करना ही बड़ा चैलेंज होता है।

सिंगापुर से आए मेडल लेने

ईपीजीपी चेयरमैन का गोल्ड मेडल हासिल करने वाले नागेश महावत सिंगापुर से डिग्री और मेडल लेने पहुंचे। उन्होंने बताया, मैं देहरादून का निवासी हूं। मैंने थ्योरेटिकल फाउंडेशन को सीखने व समझने के लिए यह पढ़ाई की है। मैं ऑलरेडी एक कंपनी में जॉब कर रहा हूं, अब इस पढ़ाई का फायदा मुझे काम को आसान करने में मिलेगा।

Patrika, 11th April 2024, P.04,(Patrika My City)_page-0001